फाइट बैक: दीवार या मंदिर?

एक सुबह एक व्यक्ति सड़क पर टहलते हुए जा रहा था। आज क्यूँ की उसके पास हमेशा से होता है उस से अधिक समय था, तो चारों ओर देखते हुए, निरीक्षण करते हुए उस का चलना शुरु था। तभी उसने एक मजदूर को एक पत्थर पर काम करते देखा। वह मजदूर के पास गया और उसने मजदूर से पूछा 'तुम यह क्या काम कर रहे हो?' 'ये पत्थर तराशने हैं इसलिये मैं उन पर काम कर रहा हूँ।' मजदूर ने जवाब दिया। 'ठीक है' ऐसा कहते हुए वह व्यक्ति आज चलने लगी। थोड़ी ही दूरी पर उसने एक और मजदूर को पत्थर पर ही काम करते हुए देखा। बेशक, वह व्यक्ती पहले वाले के जवाब से पूरी तरह संतुष्ट नहीं था, इसलिए उसने दूसरे मजदूर से फिर पूछा, 'तुम इन पत्थरों का क्या कर रहे हो?' तो मजदूर ने कहा 'यहाँ हम तीस फुट ऊँची और साठ फुट लंबी दीवार बना रहे हैं। इसीलिए हम पत्थर तराश रहे हैं।' ऐसा केहकर उसने झट से पत्थर उठाया और फिर से काम में जुट गया। इसके बाद वह व्यक्ति वैसेही आगे चलती रही। अब उसकी मुलाकात एक और मजदूर से हुई। तीसरे मजदूर से उस व्यक्ति ने पूछा, 'तुम सब यह क्या कर रहे हो? कोई पत्थर तराश रहा है, कोई दीवार बना रहा है, और अब आप?' तीसरे मजदूर ने उस व्यक्ति को समझाया, 'यहां हम सिर्फ पत्थर तराश नहीं रहे हैं या सिर्फ दीवार नहीं बना रहे हैं, बल्कि यहां हम विठ्ठल भगवान का एक बड़ा मंदिर बना रहे हैं। आषाढ़ी एकादस से पहले हम मंदिर का काम पूरा करेंगे और एकादस को ही इसका भव्य उद्घाटन करेंगे। मेरी आंखों के सामने अभी भी एक तस्वीर है कि मैं विठ्ठल भगवान की प्रसन्न मूर्ति के सामने भक्ति में लीन हो कर हाथ जोडे खड़ा हूं। और इसीलिए तो हम यह मेहनत भरा काम कर रहे हैं।'

इस कहानी में आपने एक मजेदार बात गौर की होगी कि पहला मजदूर उसके दृष्टिकोण से सिर्फ पत्थर तोड रहा था, दूसरे मजदूर के दृष्टिकोण से वह दीवार बना रहा था, लेकिन तीसरे के लिए वह एक उसका सपना था। उसके दिमाग में बसी एक तस्वीर थी। उसके दृष्टिकोण से वह सपना, वह चित्र एक सफलता थी। बिजनेस में भी काम करते हुए एक ऐसा ही सपना होना चाहिए और मन में एक तस्वीर बनानी चाहिए।

वास्तव में व्यवसायी के लिए उसका व्यवसाय उसके जीवन का एक अभिन्न अंग होता है। एक सच्चा व्यापारी अपने जीवन का लगभग एक तिहाई (33%) हिस्सा व्यवसाय के लिए व्यतीत करता है। और इसीलिए जीवन में सफल होने के लिए बिजनेस में भी सफल होना जरुरी होता है। बिजनेस में सपने पूरे करने होते है। जीत हासील करनी होती है।

तो इस जीत का मतलब क्या है? प्राचीन चीनी सैन्य रणनीतिकार सन त्झू ने जीत के लिए बहुत ही अलग, अद्वितीय शब्द गढे है। उनका कहना है कि 'Winning means developing the position that people would rather join than attack' अर्थात, 'जीतने का मतलब ऐसी स्थिति का निर्माण करना, जिसमें लोग हमला करने के बजाय आप के साथ शामिल होंगे।' कुल मिलाकर, अगर हम अपने सपनों को सफल बनाना चाहते हैं, तो हमें लोगों को साथ लेना होगा। विभिन्न बिझनेस युनिट्स को साथ रखना होगा। तभी हम अपने सपनों को सफलतापूर्वक साकार कर सकते हैं।

खैर, भले ही कुछ लोग बडा व्यवसाय चला रहें हो, फिर भी बडे से बडा बिझनेस खडा करना यह कोई हर उद्यमी का सपना नहीं होता है। सपने अलग भी हो सकते हैं। मैं एक अच्छे जौहरी को जानता हूं। कई जगह उनकी शाखाएं हैं। लेकिन उन्हें पुरानी-ऐतिहासिक वस्तुओं को इकट्ठा करने का और उनका जतन करने का बडा शौक है। एक सपना है। इसलिए वे लगातार उस सपने को जी रहे होते हैं, उसके लिए काम करते रहते हैं। जान पहचान वाले एक अन्य जौहरी है। उनका अच्छा शोरुम है। लेकिन वे आसपास के सभी मैराथन में दौड़ने के लिए शोरुम की भागदौड से समय निकाल लेते हैं। मैराथन को कम से कम समय में पूरा करना यह उनका सपना है। इसके लिए वे रोजाना नियमित अभ्यास भी करते रहते हैं। यानी जीवन में ऐसी जीत से, व्यापार में जीत से, अपने सपनों से, हमें जीवन का सच्चा अर्थ मिलते रहता है। हमारे अंदर एक तरह की संतुष्टि का भाव पैदा होते रहती है। संक्षेप में, उचित व्यवसाय प्रबंधन द्वारा हम अपने जीवन का अर्थ प्राप्त कर सकते

हैं। जापानी में कहें तो, 'इकिगाई'। इसका अर्थ है 'एक ऐसी संकल्पना जो किसी को उद्देश्य की भावना देती है, जीने का कारण देती है।' और हम उसे व्यवसाय का उचित प्रबंधन करके भी प्राप्त कर सकते है।

लेकिन ऐसे सपनों की सार्थकता के लिए या सफल जीत के लिए आवश्यक होती है विजन याने लक्ष्य! मतलब हमे कहा जाना है यह हमें मालूम होना चाहिए। यहाँ मुझे 'एलिस इन वंडरलैंड' (1865 में प्रकाशित एक अंग्रेजी उपन्यास) में से एक छोटा सा प्रसंग याद आता है। ऐलिस (कहानी का मुख्य पात्र) थकी हुई होती है। तरह-तरह की परिस्थितियों से गुजरने के बाद वह पूरी तरह हैरान हुई होती है। और ऐसे में वह कहती हैं 'Would you please tell me which way I opt to go from here?' ('कृपा कर क्या आप मुझे बताएंगे कि यहां से आगे बढ़ने के लिए मैं कौन सा रास्ता चुनूं?') फिर बिल्ली (कहानी का पात्र) ऐलिस से कहती है, 'That depends a good deal on where you want to get to.' ('यह काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि तुम कहाँ जाना चाहती हो।') यानी आप कहाँ जाना चाहते हो उस बात पर आप कैसे जाएंगे यह निर्भर होता है। मतलब हम अपने बिजनेस के लिए जो भी योजना बनाने वाले होते हैं, नियोजन करने वाले होते है, वह इसी बात पर निर्भर करता है की हम कहां पहुंचना चाहते हैं? इसलिए एक सफल जीवन के लिए आवश्यक होनेवाले सफल व्यवसाय के लिए हमारे पास व्हिजन होना जरुरी होता है।

अब इस व्हिजन से क्या हासील होने वाला होता है? चलो पता करते हैं। व्हिजन की वजह से फोकस तैयार होता है। मतलब यह तय कर सकते है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। व्हिजन हमें यह जानने में भी मदद करती रहती है कि कौन सी नई चीजें सीखनी होंगी?, कौन सी नई क्षमताऐं निर्माण करनी होगी? मिसाल के तौर पर, यदि हमें एक बिल्डिंग का निर्माण करना हो तो पहले हमें बिल्डिंग का प्लान बनाना होता है। अब प्लान जितना अच्छा होगा, उतने ही कम समय में (और उसके अनुसार कम लागत में) बिल्डिंग पूरी हो जाएगी। बहरहाल, इस के बारे में एक मजेदार बात यह है कि इस बिल्डिंग के सपने को हम दो बार जी रहे होते हैं। एक प्लानिंग करते समय और दूसरा वास्तव में बिल्डिंग निर्माण करते समय। बिझनेस की व्हिजन और उसके प्लानिंग दोनों में यही अनुभव किया जा सकता है। इसलिए व्हिजन को प्राप्त करने के लिए बिझनेस प्लान बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण होता है और उसी हिसाब से वह काम भी आता है। व्हिजन का महत्वपूर्ण लाभ यह भी है कि जो निश्चित किया है वहां तक कैसे पहुंचे? इसका छोटे-छोटे लक्ष्य और उद्देश्य तय कर के नियोजन कीया जा सकता है। जिसके आधार पर, उत्साही टीम को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। व्हीजन तक पहुँचने के लिए या उसे प्राप्त करने के लिए एक फीडबैक लूप तैयार किया जा सकता है। जैसे की व्हीजन तक पहुँचने के लिए क्या हम सही रास्ते पर हैं क्या? इसमें किसी सुधार की आवश्यकता है क्या? यह हम जान सकते हैं। जिससे व्हिजन को हासिल करना बिल्कुल सहज हो जाता है।

कुल मिलाकर, बिझनेस में और उसी रास्ते यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं, तो आज ही एक व्हिजन याने लक्ष्य निर्धारित करें। छोटे-छोटे लक्ष्य और उद्देश्य तय करते हुए एक प्लान तैयार करें। फिर योजना के अनुसार काम करना शुरु करें और सातत्य से करते रहें। 'मंजिल कौनसी दूर है? पास ही तो है।' विजयम् भवतु!!